अतिरिक्त लेख - 6

अगुवाई
दल अगुवों के लिए निर्देश

निर्देश जो हस्थ-पुस्तिका में मोटे अक्षरो में लिखे हैं वे दल के अगुवो के लिए हैं जिससे वे विद्यार्थियों को सम्मिलित होने के लिए उत्साहित कर सकें।

1. <u>आराधना का संचालन</u>

- दल के सदस्यों को बाइबल के लेखाँश को पढ़ने दें। दल के अगुवे को परमेश्वर के किसी एक गुण का मनन करते हुए दल की की अगुवाई करने में उनका साथ दें।
- बारी-बारी से एक या दो वाक्यों में परमेश्वर की आराधना करें। या फिर दल को दो या तीन लोगों के दल में बाँट कर धीमी आवाज़ में आराधना करें।

2. <u>गवाही देने के समय का संचालन</u>

- **तैयारी करने का कार्य -** क्योंकि घर परकाम करने के लिए बाइबल के लेखाँश दिए गए हैं उन के साथ हर सदस्य नियमित रूप से परमेश्वर के साथ एक निजि संगति का शान्त समय बिताएगा।
- हर सभा के दौरान दल के सदस्य बारी बारी से अपनी गवाही देंगे कि गुज़रे हफ्ते में उन्होंने परमेश्वर के साथ अपनी निजी संगति के समय में क्या सीखा था। उन सब को 2-2 मिनट का समय दें। उनको उत्साहित करें कि वे अपने लिखित नोट्स का सहारा ले सकते हैं।
- विद्यार्थियों की सहायता करें कि वे हर सदस्य की गवाही को ध्यान से सुनें और उसे गम्भीरता से लें। और जो वह कहता है उसे ग्रहण कर लें। विद्यार्थियों को याद दिलाएँ कि किसी की गवाही पर कोई प्रतिक्रिया न करे और उसके विषय में कोई टिप्पणी करें जिससे किसी के आत्मविश्वास को ठेस पहुँचे।
- दल के नेता निम्न प्रकार की गवाहियों को अपने प्रशिक्षण के कार्यक्रम में सम्मिलित कर सकते हैं।
  - जीवन के अनुभव की कठिन या सकारात्म गवाही।
  - एक गवाही।
  - एक प्रार्थना के उत्तर की गवाही, या एक प्रार्थना विनती की गवाही।
  - उस क्रिया की जिसके द्वारा आत्मिक जीवन में उन्नति पाई हो या चरित्र का विकास हुआ हो।

3. <u>शिक्षाओं का संचालन</u>

- शिक्षाओं को अच्छी तरह से तैयार करना और निर्णय लेना कि आप उस शिक्षा को देने के लिए कितने समय की ज़रूरत होगी या आप कितना समय लेना चाहेंगे।
- जब आप दल का अगुवा बन कर शिक्षा देते हैं तब आपके संचालन की शैली एक शिक्षक की होती है। एक अच्छा दल का अगुवा सच की शिक्षा स्पष्ट रूप से, और उसकीसही धारणा को पूरे अधिकार से देता है। यह सत्य केवल भिन्न लोगों का दृष्टिकोण नहीं होता है। यह और बात है कि यह सच समझदारी और बाइबल के विषय में अपने अर्थ को स्पष्ट करने के सही सिदान्तों पर आधारित होना चाहिए। दल का अगुवा शिक्षाओं के विषयों पर विचार-विमर्श का भी मार्गदर्शन करता है। वह विद्यार्थियों की खोज करने मे, विचार करने में, निर्णय लेने में, और शिक्षाओं को स्वयं पर लागू करने में भी मार्गदर्शन करता है। उनका उद्देश्य यही होता है कि विद्यार्थी सत्य के विषय में विकसित होकर निजि रूप से सही धारणा बना सकें और इन सत्यों को अपने जीवन में लागू करने के लिए समर्पित हो जाएँ।
- केवल बाइबल का ही अपने मानव विचारों और व्यवहार में और मसीही सिद्धान्तों को अपने जीवन पर

सम्पूर्ण अधिकार से प्रयोग करें।

- विद्यार्थियों को बाइबल के लेखाँशों को पढ़ने दे जो आप अपनी शिक्षा के दौरान प्रयोग करते हैं। (**पढ़ें)**
- विद्यार्थियों को अपने लिए सत्य की खोज खोज करने दें। (**खोज**) सही सिद्धान्तों का प्रयोग करके समझाएँ और समझदारी से बाइबल के अर्थ को स्पष्ट करें।
- विद्यार्थियों को विचार विमर्श में सम्मिलित करें। विद्यार्थियों को अवसर दें कि वे स्वयं विचार-विमर्श करें और निजि प्रश्न पूछें। (**विचार-विमर्श**)
- प्रश्नों के उत्तर तैयार करें और उन पर विचार-विमर्श करें। फिर संक्षेप में सारी शिक्षाओं का संक्षिप्त वर्णन करें।
- विद्यार्थियों को उसाहित करें कि वे जो कुछ भी वे बाइबल से या एक दूसरे से सीखते हैं उसके अपने निजि नोट्स तैयार करें।
- शिक्षा देने का प्रशिक्षण जितना सम्भव हो सके उतना व्यवहारिक बनाएँ। शिक्षाओं को छोटे दल के बीच तथा घरेलु जीवन में लागू करें।
- विद्यार्थियों को घर का काम पूरा करने और अगली शिक्षा के लिए तैयारी करने के लिए कहें।

4. <u>याद कराने का संचालन</u>

- विद्यार्थियों को बाइबल से लिए अच्छे कारण बता कर निरन्तर प्रेरित करें कि वे बाइबल के पद याद करें।
- बाइबल के हर नए पद के अर्थ के विषय में मिल कर मनन करें।
- हर बार एक नए विद्यार्थी को याद कराने का अगुवा बनाएँ। नियम पुस्तिका 2 से 12 में लिखे हर नए बाइबल पद को दल बना कर याद करें। बाकी के पद घर पर याद करें।
- हर सभा के दौरान पूरे दल को दो-दो के दल में बाँट दें और एक दूसरे को जाँच लें कि उनका बाइबल का पाद याद हुआ है या नहीं।
- कभी-कभी दो-दो का दल बना कर जाँच के पहले याद किए गए 5 पद याद है या नहीं।

5. <u>बाइबल अध्ययन का संचालन</u>

- बाइबल अध्ययन की तैयारी भली प्रकार करें।
- जब आर एक दल के अगुवे हैं तो आप ही बाइबल अध्ययन की अगुवाई करें तो यहाँ पर आप का संचालन करने का तरीका एक मार्गदर्शक के समान होगा। दल के अगुवे को शिक्षक नहीं बनना है। एक अच्छा अगुवा अपने विद्यार्थियों को खोजने, सोचने, नतीजे निकालने और उन्हे जीवन में लागू करने का केवल प्रशिक्षण देता है।वह उन खोजों को बाँटने में, प्रश्नों के विचार-विमर्शमें, दिमाग़ में तूफान उठाने में कि कैसे उनको जीवन में लागू किया जा सकता है, इन सब में मार्गदर्शन करता है। उसकी कोशिश रहती है कि हर बाइबल अध्ययन के समय जिस में सत्य की खोज करनी है (प्रेरितों के काम 17:11) सत्य को समझने के लिए (2 तिमु.2:15) सत्य को लागू करना (मत्ती 7:24-27) और सत्य को दूसरों को सिखाने के लिए (मत्ती 28:19-20) सत्य लोगों के किसी भी दृष्टिकोण से, बाइबल के अर्थ बताने के जो नियम के अनुसार है उन से अधिक है उस सत्य से जो परमेश्वर ने बाइबल में कहा था और हम से करने को कहा था। इसलिए बाइबल को उन नियमों के अनुसार जो बाइबल में समझाए गए हैं, सही से समझाना ज़रूरी है। यह दल के अगुवों की ज़म्मेदारी है कि वह अपने दल को सही राह पर ले कर चले। उसे पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन को समझने में अति संवेदलशील रहना होगा।
- दल के सभी विद्यार्थियो को सभा में शामिल रखें। विद्यार्थियों से कहें कि वे बारी-बारी से दल के सामने बाइबल में से ऊँचे शब्दों में पढ़ें। उनको उत्साहित करें कि वे सत्य को स्वयं खोज निकालें और उसे सही रीति से समझ सकें

और अपने जीवन में लागू कर सकें। और फिर अपनी खोज, उससे क्या समझा है, और कैसे उसे अपने जीवन में लागू किया है खुले दिल से दल के साथ बाँट सकें। उनको उत्साहित करें के वे अपने विचार के साथ साथ अपनी भावनाओं को भी दल के साथ बाँटें। उनको इस बात के लिए भी उत्साहित करें के वे उन सत्यों के विषय में बाइबल अध्ययन के समय विचार विमर्श करें और अपने मन में उठने वाले प्रश्न पूछें।

- दल के विद्यार्थियों को उत्तेजित करें कि वे बाइबल अध्ययन के निजि नोट्स तैयार करें और यह भी लिखें कि दल के बाइबल अध्ययन और विचार विमर्श के दौरान उन्होंने अन्य लोगों से क्या सीखा था।

6. <u>प्रार्थना समय का संचालन</u>

- हर सभा में घेरे में बैठ कर बारी बारी एक या दो वाक्यों में प्रार्थना करें।
- कभी-कभी दो या तीन लोगों के दल बना कर प्रार्थना करें।
- विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करें कि कैसे परमेश्वर के वचन की शिक्षा, गवाही और बाइबल अध्ययन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना करते हैं। और कैसे मध्यस्त की प्रार्थना करते हैं। या फिर बाइबल के वचन का प्रयोग करके कैसे प्रार्थना करते हैं।
- विद्यार्थियों को सिखाएँ कि वे दूसरों की प्रार्थनाओं की सूची बना ले जिनके लिए प्रार्थना करनी है।

7. <u>दल के अगुवों की शैली का संचालन</u>

- दल की शैली अगुवाई करना या संचालन करना है उस पर प्रभुता करना नहीं है। (मत्ती 20:25-28)
- अगुवाई करना या संचालक करने का अर्थ है दूसरे के सामने निम्न क्षेत्रों में एक उदाहरण रखना। (1 पतरस 5:3)

  - परमेश्वर के साथ अपने निजि सम्बन्ध और दूसरे लोगों के साथ आपके सम्बन्ध (1 तिमु. 4:12)
  - अपने निजि विकास, व्यवहार, और दृड़ सिद्धान्तों का संचालन। (1 तिमु. 4:15-16)
  - अपनी दृड़ शिक्षा का संचालन (1 कुर. 4:6; 2 तिमु. 1:13-14; तीतुस 2:7-8)
  - बाइबल का सही रीति से प्रयोग करना। (2 तिमु. 2:15)
  - जो सिखा रहे हैं उसे खुद पर भी लागू करना। (मत्ती 23:3; एज़रा 7:10)
  - प्रेम से निर्देश देना नकि झगड़ा करना। (2 तिमु. 2:23-26)

- अगुवाई करना या संचालन करने का अर्थ है बड़ी सभाओं में प्रचार करना, या छोटे दल में प्रचार करना या फिर घर पर प्रचार करना है। (प्रेरितों के काम 5:42)जो कुछ परमेश्वर ने आप पर बाइबल से प्रकट किया है जो सहायता कर सकता है कि लोग आत्मिक रीति से आगे बढ़ सकें। (प्रेरितो के काम 20:20,27)
- अगुवाई करने या संचालन करने का अर्थ है विद्यार्थियों को प्रेरित करना, समझाना, चुनौती देना, सहायता करना, सावधान करना, डाँटना, सुधारना और प्रशिक्षण देना है। (2 तिमु. 3:16-17) और सब से ऊपर अपने विद्यार्थियों से प्रेम करना और उनके लिए उत्साह बढ़ाने वाला बनना है। (इब्रानियों 3:12-13; 10:24-25)
- अगवाई करना या संचालन करनें का अर्थ है एक अच्छा श्रोता बनना। (नीतिवचन 13:17) अपने विद्यार्थियों को गम्भीरता से लें, उन्हें जैसे वे हैं वैसे ही कबूल करें। (रोमियो 15:7) अपने विद्यार्थियों को गलती करने की अनुमति दें।
- अगुवाई करना या संचालन करने का अर्थ है अपने विद्यार्थियों के लिए प्रार्थना करना, उनकी सामर्थ और ज़रूरतों को जान लेना, जान लेना कि परमेश्वर उनके वन में कैसे कार्य कर रहा है और उनके विकास के लिए आप कैसे सहायता कर सकते हैं।